शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

देवघर के वीर सपूतों का राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान (1901–1947 ई०)

प्राप्तिः 14.12.2022
स्वीकृतः 25.12.2022

91

डॉ० वकुल रस्तोगी
प्रोफेसर,
मेरठ कॉलिज, मेरठ

रामानन्द कुमार पासवान
शोधार्थी
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेलः *ramanandbed@gmail.com*

सारांश

देवघर के वीर सपूतों ने स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष में 1901 से 1947 ई. तक निरन्तर भाग लिया। इस अवधि में संथाल परगना के आंदोलन के परिवेश की पृष्ठभूमि और लोगों में राष्ट्रीय जागरण की परिस्थिति बदस्तुर जारी रही। 1905 ई. जो स्वदेशी आंदोलन के रूप में विश्व मानचित्र पर स्थापित है, जिसमें देवघर के वीर सपूतों का योगदान भी सराहनीय रहा। श्री अरविन्दो इसके मंत्रदाता थे। देवघर के वीर सपूतों में वारीन्द घोष की ''गोल्डन लीग'' संस्था का सहयोग भी रहा जिसने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार भी शामिल था। 1917 ई. में पंडित सखा राम गणेश देवस्कर जो आर0 मित्रा हाई स्कूल, देवघर के शिक्षक थे जो देवघर के क्रांतिकारियों को दिशा निर्देश प्रदान किया करते थे। 1916 के प्रारम्भ से 1947 ई. तक के राष्ट्रीय आंदोलन में यहाँ के वीर सपूतों ने जिस तत्परता के साथ अपने आपको समर्पित कर दिया वह भूले से भुलाया नहीं जा सकता। यह भी उतना ही सत्य है, कि 1920 से सम्पूर्ण संथाल परगना जिले के आंदोलन का नेतृत्व पं0 विनोदानंद झा के कंधों पर आ गया। 1942 की क्रांति में संथाल परगना सम्पूर्ण बिहार में क्रांति के पथ का निर्देशक था। एक ओर डॉ0 लम्बोदर मुखर्जी, उषारानी मुखर्जी, पं0 सर्वानंद मिश्र और दूसरी और पं0 विनोदानंद झा, शशीभूषण राय, पं0 रामराज जजवाड़े, पं0 इन्द्रनारायण झा, श्री मोतिलाल केजरीवाल सम्पूर्ण संथाल परगना में स्वतंत्रता आंदोलन की दीपशिखा को प्रज्वलित कर रहे थे। रामेश्वर लाल सर्राफ का नाम स्वतंत्रता के इतिहास में सम्पूर्ण संथाल परगना को गौरव से अविभूत कर देता है। श्री रामबाबू, श्री रामराज जजवाड़े, श्री गौरीशंकर डालमियाँ और पं0 शिवराम झा स्वाधीनता संग्राम के ही स्वप्न में अपनी दिनचर्या व्यतीत करते थे।[1]

मुख्य बिन्दु

वीर सपूत, संथाल परगना, गोल्डन लीग, दीपशिखा, विश्व मानचित्र, देवघर (वैद्यनाथधाम)।

देवघर (संताल परगना) के वीर सपूतों का स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष को मैंने वर्षक्रम में बांधने का प्रयास किया है, जो इस प्रकार है–वर्ष 1916 में देवघर के वीर सपूतों अखिल भारतीय काँग्रेस की बैठक में भाग लिया था। पं0 शिवराम झा, पं0 इन्द्रनारायण झा सम्मिलित हुए थे, इनके साथ प्रभुदयाल, हिम्मत सिंह भी थे। इसी समय में पं0 विनोदानंद झा भी सक्रिय राजनीति में आ गए थे। 1917 ई. में

देवघर के वीर सपूतों ने समाज सेवा के कार्य को प्रारम्भ किया।[2] 1918 ई. में देवघर के क्रांतिकारियों का जमाव था। सेडिशन कमिटि 1918 की रिपोर्ट में भी इसका उल्लेख हैं– युगांतर का एक मुद्रक पटना से आया हुआ एक बंगाली था। अलीपुर षड़यंत्र के अभियुक्तों के मुकदमों के दरम्यान यह मालूम हुआ कि देवघर में ''शील लॉज'' नामक एक महान क्रांतिकारियों के प्रशिक्षण तथा बम बनाने के लिए किराए पर लिया गया भवन था जहाँ से क्रांतिकारियों के निर्देश से देवघर के वीर सपूत काम किया करते थे।[3]

1919 ई. में राष्ट्रीय आंदोलन में सेवा का महत्व बढ़ गया था। यहाँ के वीर सपूतों ने भी विदेशी सरकार की नृशंस दमन नीति के विरोध में सभा आयोजित की थी। उसी समय असहयोग आंदोलन की स्वीकृति का परिवेश भी सम्पूर्ण देश में चल रहा था, और उसकी षुरुआत यहाँ भी हो गयी थी। संथाल परगना के विभिन्न क्षेत्रों में वीर सपूतों ने शराब बंदी आंदोलन में भाग लिया।[4] 1920 ई. में तो यहाँ के वीर सपूत सम्पूर्ण रूप से राष्ट्रीय आंदोलन में जुट गए। 1920 ई. में ही कलकता के अखिल भारतीय कॉंग्रेस के अधिवेशन में देवघर के वीर सपूतों का एक दल भी सम्मिलित हुआ था, जिसमें पं0 विनोदानंद झा भी थे। इसी समय देवघर के वीर सपूतों का निकट संपर्क सी0 आर0 दास के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए थे। 1920 ई. में ही लम्बोदर मुखर्जी के साथ शशिभूषण राय और पं0 विनोदानंद झा जुट गये तथा देवघर सहित सम्पूर्ण संथाल परगना में राष्ट्रीय आंदोलन के संचालन की योजना बनाई। 1920 ई. में ही देवघर के वीर सपूतों ने सार्वजनिक भारती पुस्तकालय की स्थापना शिवगंगा तट पर की जिसके मुख्य सहायक पंडित गौरी महाराज मिश्र थे।[5] इस समय जो असहयोग आंदोलन चल रहा था उसमें विनोदानंद झा गिरफ्तार हो गए। जामताड़ा हाई स्कूल के छात्रों ने 3 जनवरी 1921 ई. को स्कूल का बहिष्कार किया, जिले भर में नशीले पदार्थों की बिक्री पर इसका भारी प्रभाव पड़ा। इसी समय देवघर में स्वराज्य पार्टी का वर्चस्व स्थापित हो गया था। पं0 विनोदानंद झा, पं0 इन्द्र नारायण झा और लम्बोदर मुखर्जी इसके अनन्य अनुयायी थे। देवघर के वीर सपूतों ने तिलक स्वराज्य कोश में धन संचय किया। खादी का भी व्यापक प्रचार किया। वर्ष 1923 ई. में स्वराज्य दल के सक्रिय सदस्य के रूप में देवघर के वीर सपूत काम कर रहे थे। स्वराज्य दल के गया अधिवेशन में ही देवघर के श्री राय हरि प्रसाद लाल और पं0 विनोदानंद झा भागलपुर प्रमण्डल के लिए प्रचार–समिति के प्रभारी बनाये गए।[6] 1923 ई० में स्वराज्य दल का कॉंग्रेस के साथ विलय हो गया। 1924 ई. में देशबंधु चितरंजन दास ने तारकेश्वर के भ्रष्ट महन्त के विरूद्ध आंदोलन छेड़ा था। 1925 ई. में 16 जून को सी0 आर0 दास की मृत्यु के बाद देवघर में शोक सभा आयोजित हुई जिसका आयोजन देवघर के वीर सपूतों ने किया था। सितम्बर 1925 ई में देवघर के वीर सपूतों के आग्रह पर गाँधीजी देवघर आये। गाँधीजी ने लिखा था– ''पण्डा स्वंय सेवक द्वारा व्यवस्था अन्यत्र की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छी जान पड़ी।''[7]

1926 ई. में डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद देवघर आये थे और उन्होंने देवघर के तत्कालीन एस0 डी0 ओ0 राबर्टसन् साहब के आतंक के विरूद्ध निपटने का मार्ग प्रशस्त किया था। 1927 ई. में देवघर षड़यंत्र केस का पता चला, इसमें 20 व्यक्ति गिरफ्तार किए गये थे। तभी देवघर के वीर सपूतों ने इनका सहयोग एवं सहायता की। 3 फरवरी 1928 ई. को देवघर के वीर सपूतों ने साइमन कमीशन के बहिष्कार का जुलूस पं0 विनोदानंद झा के नेतृत्व में निकाला था।[8] 1928 ई. में ही संथाल परगना में सफाहोड़ आंदोलन प्रारम्भ हुआ था। 1929 ई. में ही हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का बोलबाला पूरे देश में बढ़ गया था। देवघर में भी इसके पक्ष–विपक्ष में चर्चायें हो रही थीं। देवघर के वीर सपूत भी इसमें संलग्न थे। 1929 ई. में देवघर के वीर सपूतों के बीच प्रसिद्ध बिहार के मालवीय पंडित शिवराम झा ने सात विद्यार्थियों और एक अध्यापक को लेकर हिन्दी प्रवेशिका वर्ग के रूप में नवीन संस्था को जन्म दिया। पं0 शिवराम झा ने बालानंद

ब्रहाचारी से सहायता प्राप्त की और कलकत्ता के सत्यनारायण डालमिया ने भी इसमें सहयोग दिया था। 26 फरवरी 1930 ई. में यहाँ के वीर सपूतों ने खहद्र फेरी का कार्यक्रम चलाया।[9]

सविनय अवज्ञा आंदोलन में ये लोग सामूहिक रूप से सम्मिलित हुए। संथालों के बीच सुधार कार्यक्रमों को भी चलाया। 6 अप्रैल 1930 ई. से आयोजित नमक सत्याग्रह के निर्णय के अनुसार इन लोगों ने कार्य आरम्भ किया। फरवरी 1930 ई. में यहाँ के प्रतिनिधि अहमदाबाद काँग्रेस में गये थे। नमक सत्याग्रह का आयोजन मानसरोवर तालाब के पास किया गया था। जिसमें देवघर के वीर सपूत सामूहिक रूप से सम्मिलित थे। वीर सपूतों का एक जत्था बड़हिया में पहुँचा था उसके नेता कुमार कालिका सिंह थे। इसी समय पं0 विनोदानंद झा सबैजोर और मधुपुर भी गये थे जहाँ उन्होंने जोरदार भाषण दिया था। 4 मई 1930 ई. को देवघर के वीर सपूतों ने गाँधीजी की गिरफ्तारी के विरोध में जुलूस निकाला था।[10] सितम्बर 1930 में यहाँ के वीर सपूत ने रचनात्मक कार्यक्रम सप्ताह मनाया था। इसमें दो दिन चरखा और एक दिन तकली प्रतियोगिता के आयोजन की व्यवस्था थी, इसी समय देवघर में खादी उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए खादी बोर्ड की स्थापना की गई। सन 1930 ई. के नमक सत्याग्रह के समय महान स्वतंत्रता सेनानी त्रिगुणानन्द खवाड़े ने अपना मकान काँग्रेस कार्यालय के लिए दे दिया था। 29 अप्रैल 1930 ई. को देवघर के वीर सपूतों ने एक सभा का आयोजन किया था। पं0 विनोदानंद झा अपने भाषण द्वारा निरन्तर लोगों को सत्याग्रह के लिए प्रेरित करते रहे थे। पं0 विनोदानंद झा इसी आंदोलन के क्रम में राष्ट्रीय एवं बिहार के महान नेता के रूप में उभर कर सामने आये।[11]

5 मई,1931 में गाँधी–इरविन समझौतों के बाद जो व्यापक आंदोलन हुआ उस समय देवघर के वीर सपूतों के सरगना पं0 विनोदानंद झा बंदी बनाये गये। उनके साथ नथमल सिंहानिया भी जेल गये थे। 23 मार्च 1931 को देवघर में शहीद भगत सिंह की फांसी के बाद शोक सभा आयोजित की गयी थी। 1931 ई. में देवघर के वीर सपूतों ने बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के दसवें अधिवेशन का आयोजन किया था। स्वामी भवानी दयाल सन्यासी इसके सभापति थे। नवम्बर 1932 में बिहार प्रान्तीय बोर्ड की स्थापना हुई। संथाल परगना में भी जिला समिति बनी जिसके संचालक डॉ0 लम्बोदर मुखर्जी, शशिभूषण राय सहित देवघर के सभी आन्दोलनकारी वीर सपूत थे। नवम्बर 1932 में ही सुप्रसिद्ध विद्वान इन्द्र रमण शास्त्री देवघर आये और उन्होंने वीर सपूतों के सहयोग से अस्पृश्यता निवारण के संबंध में जोरदार भाषण दिया।[12] इसी समय बिहार में व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया था और यहाँ के वीर सपूत जेल भी गये थे। पं0 विनोदानंद झा ने इस समय चल रहे बहिष्कार आंदोलन में भाग लिया था। इनके अलावा रामराज जजवाड़े, पं0 इन्द्र नारायण झा, इन्द्र दत्त द्वारी, पं0 कृपानाथ पांडे, छोटन पंडित, पं0 शिवराम झा, पं0 हरेन्द्र नारायण झा, पं0 गया प्रसाद खवाड़े, पं0 रामचन्द्र झा आदि।[13] 1932 ई. में ही नशा बंदी आंदोलन के क्रम में चन्डी नरौने और दयानंद मिश्र जेल गये थे। 1933 ई में संथाल परगना जिला हरिजन सेवक संघ का कार्य प्रारम्भ हुआ। देवघर के वीर सपूतों के अगुआ पं0 विनोदानंद झा इसके प्रमुख नेता थे। इसके साथ शशि बाबू और नथमल सिंहानियाँ भी थे।

1934 ई. में देवघर के वीर सपूतों ने मुख्य रूप से खादी उत्पादन अपृश्यता निवारण सांप्रदायिक एकता, नशा बंदी, राष्ट्रीय पद्धति की शिक्षा, उपयोगी लघु उद्योगों, ग्राम–निर्माण आदि कार्यक्रमों को व्यापक रूप से प्रारम्भ किया था। इस समय काँग्रेसी सदस्यों की संख्या बढ़ाने का भी अभियान चल रहा था। 25–26 अप्रैल 1934 को गाँधीजी दोबारा देवघर आये और देवघर के तीर्थ पुरोहितों ने उनका स्वागत किया।[14] 1934 में ही गाँधीजी के साथ ठक्कर बापा देवघर आये थे और इन्होंने 40 रुपये मासिक की सहायता की जिससे इस क्षेत्र के संथालों के उत्थान के लिए कार्य किया जा सके।

1935 ई० में ही संथाल परगना जिला राजनीतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें देवघर के तीर्थ पुरोहितों ने सहयोग किया। 1935 में देवघर के आस पास ग्रामीण अंचलों में हैजा फैल गया था। देवघर के वीर सपूतोंने उन ग्रामीण अंचलों में जाकर बीमार लोगों की सेवा की और उनकी चिकित्सा की व्यवस्था निजी चंदे के पैसे से की। 1935 में ही गोवर्द्धन साहित्य महाविद्यालय की विधिवत स्थापना की गयी जिसमें पं0 शिवराम झा का सबसे अधिक योगदान रहा। 1935 में संथाल परगना में ही संथाल जननी का अवतरण माताजी के रूप में हुआ। श्रीमती उषा रानी मुखर्जी की लोकप्रियता इतनी अधिक बढ़ गयी कि इन्होंने देवघर सहित सम्पूर्ण संथाल परगना के अंचलों में महिलाओं का एक व्यापक आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। अपने गुरु स्वामी सत्यानन्द परमहंस की प्रेरणा से लोक सेवा का कार्य इन्होंने प्रारम्भ किया। देवघर में भी वीर सपूतों के परिवारों से महिलाओं को संगठित किया। पं0 इन्द्र नारायण झा की पुत्री कुसुम कुमारी ने इसमें भाग लिया था और पं0 रामराज जेजवाड़े की पत्नी भी इसमें भाग लेती थी।[15]

1936 ई. में संथाल परगना जिला कांग्रेस कमिटी का वार्षिक उत्सव मनाया गया जिसमें डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद आये थे और हिन्दी विद्यापीठ के छात्रावास में ठहरे थे। इसमें विशेष रूप से हिन्दी विद्यापीठ के वार्षिक उत्सव को ही प्रधानता दी गयी थी। देवघर के वीर सपूत ही इसके आयोजक एवं व्यवस्थापक थे। 1937 ई. में शशीभूषण राय पाकुड़ बड़हरवा क्षेत्र से निर्विरोध बिहार विधान सभा के लिए चुने गये। सुधीर कुमार राय जो शशीभूषण राय के पुत्र हैं, लिखते हैं कि ''समकालीन लोग कहते हैं कि शशी बाबू संथाल परगना जिले के महात्मा गाँधी थे तो पं0 विनोदा बाबू जवाहर लाल।''[16] 1939 में देवघर के वीर सपूत ने बिहार प्रांत कांग्रेसी मंत्री मण्डल को सहयोग दिया और सभी मंत्रियों के साथ पं0 विनोदानंद झा भी इससे अलग हो गए। इस समय से ये लोग कांग्रेस के संगठन में लग गए। 1939 में ही जिला बोर्ड का गठन हुआ था। इसी समय पं0 विनोदानंद झा ने बंगालियों और बिहारियों के बीच आपसी प्रेम भाव का विस्तार किया। 1939 में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की पार्टी अग्रगामी दल का गठन हो गया था। संथाल परगना के डॉ0 लम्बोदर मुखर्जी, उषा रानी मुखर्जी और भुवनेश्वर पाण्डेय इसके संचालक सदस्य बने थे।

1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह का कार्य प्रारम्भ हो गया था और देवघर के वीर सपूत इसमें सम्मिलित हो गये थे। फरवरी 1940 में सुभाष बाबू पुनः देवघर आये थे।[17] देवघर के वीर सपूत ने राष्ट्रीय सप्ताह समारोह का आयोजन किया। नवम्बर 1940 के अंत में संथाल परगना के कांग्रेस नेताओं ने सरैयाहाट में एक सत्याग्रही शिविर का आयोजन किया था, उसमें देवघर के वीर सपूत ने भाग लिया था। पं0 विनोदानंद झा इसके नेतृत्व कर रहे थे। 1941 ई. में रामगढ़ कांग्रेस के अधिवेशन में राजेन्द्र प्रसाद के आह्वान पर देवघर के वीर सपूतों का एक दल सम्मिलित हुआ था।[18]

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की 5/8/1942 के प्रस्तावनुसार भारत छोड़ो आंदोलन के कार्यक्रम को सम्पूर्ण देश में लागू किया गया। अगस्त 1942 का महीना देवघर के राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण महीना था। 3 अगस्त 1942 में संथाल परगना जिला कांग्रेस समिति की बैठक शहीदाश्रम में हुई थी। इसके प्रधानमंत्री पं0 रामराज जेजवाड़े थे और इसका मुख्यालय देवघर में ही था। इस बैठक में आत्महुति और बलिदान की तैयारी की गयी। 9 अगस्त 1942 को विनोदानंद बाबू के निवास पर क्रांतिकारियों की एक बैठक हुई, जिसमें क्रांति से निपटने की तैयारियों पर विचार विमर्श हुआ। 16 अगस्त को पं0 विनोदानंद झा जेल में थे। वीर सपूतों के साथ श्री मोतीलाल केजरीवाल, रामबाबू एवं अन्य थे। कहा जाता है कि उस समय शंभुनाथ बलियासे ''मुकुल'' युवा नेता के रूप में बहुत सक्रिय थे।

इस समय श्री गौरी शंकर महराज और मुकुन्द राम मिश्र भी आंदोलन से जुडे थे। 1944 में देवघर के वीर सपूतों ने कांग्रेस के निर्देश पर रचनात्मक कार्यक्रमों को ही अपनाया और देवघर के आस–पास के ग्रामीण अंचलों में जाकर जन स्वास्थ्य और सफाई कार्यों के प्रति लोगों को आकृष्ट करने का प्रयास किया।[19] 1945 ई. में राजेन्द्र प्रसाद जी के जेल से रिहाई के बाद सम्पूर्ण बिहार में आंदोलनकारियों को रचनात्मक कार्यो की ओर ध्यान देने के लिए कहा गया। 19 दिसम्बर 1946 को पं0 रामराज जेजवाड़े भारतीय संविधान सभा के सदस्य बने। 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र होने के बाद देवघर के क्रांतिकारियों ने यहाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह का विराट आयोजन किया जिसके संगठनकर्त्ता पं0 विनोदानंद झा, पं0 रामराज जेजवाड़े, श्री गौरी शंकर डालमियाँ, श्री मोतीलाल केजरीवाल और श्री सीताराम छावछरिया आदि थे।[20]

निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता आन्दोलन में देवघर के वीर सपूतों ने तनमन धन से अपने आपको समर्पित कर दिया था। ऐसे स्वतंत्रता आन्दोलन में देवघर के वीर सपूतों की देन के संबंध में जितना भी कहा जाय, वह कम ही होगा। 1920 से 1947 तक आन्दोलन के क्षेत्र में इन लोगों ने अपनी सक्रिय भूमिका निभायी और कोई भी ऐसा वर्ष नहीं था, जब अखिल भारतीय कांग्रेस के अनुसार इन्होंने काम नहीं किया। यहाँ के वीर सपूतों ने आजादी की लड़ाई में संथाल परगना को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण बिहार को देश के लिए मर मिटने का उद्घोष किया। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, श्रीकृष्ण सिंह, डॉ0 अनुग्रह नारायण सिंह, श्री जीमूतवाहन सिंह, श्री शीलभद्र याज्ञीय, स्वामी सहजानंद सरस्वती, श्री जयप्रकाश नारायण, मजहरूल हक, श्री कृष्ण वल्लभ सहाय आदि बिहार के नेता भी देवघर के तीर्थ पुरोहितों के स्वतंत्रता आन्दोलन संबंधी प्रयासों की सराहना करते थे। यही कारण है कि वे लोग भी यहाँ आकर गुप्तवास किया करते थे। स्वतंत्रता आंदोलन के कवि बुद्धिनाथ झा ''कैरव'' की कविताओं से प्रान्तर गूँजता था–

'निकल पड़ो अब बनकर सैनिक,
हवन करो अब प्राणों का।।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे।
फौल रहे मर्दानों का।।

दूसरी ओर मोतीलाल केजरीवाल अपने मधुर कविताओं से आन्दोलनकारियों के दिल में उत्साह भर रहे थे–

खुदा वो दिन भी आयेगा।
कि अपना राज्य देखेंगे।।
जब अपनी ही जमीं होगी।
वो अपना आसमाँ होगा।।

संदर्भ

1. दत्त, के0के0. बिहार में स्वातत्रं य आंदोलन का इतिहास. भाग–1. पृष्ठ **119.**
2. वहीं. पृष्ठ **120–122.**
3. साक्षात्कार स्वतंत्रता सेनानी विश्वनाथ मिश्र के साथ.
4. झा, उमानाथ. (1984). त्याग और सेवा के प्रतीक पंडित विनोदानंद झा. नेशनल इन्टीग्रिटीः पटना. पृष्ठ **4.**

5. वहीं. पृष्ठ **10–12.**
6. स्वतंत्रता सेनानी डॉ0 लम्बोदर मुखर्जी से साक्षात्कार के आधार पर.
7. (1961). दि इंडियन नेशन. पटना प्रकाशन. 9 फरवरी.
8. सिंहानिया, नथमल. (1961). बापूजी की देवघर यात्रा. बिहार हरिजन सेवक संघः पटना पृष्ठ भूमिका से. एवं मिश्र, डॉ0 रत्नेश्वर. (1988). बिहार विभूति पं विनोदानंद झा. बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी. पृष्ठ **44.**
9. वहीं. पृष्ठ **49.**
10. वहीं. पृष्ठ **87–89.**
11. श्रीवास्तव, डॉ0 नागेन्द्र मोहन प्रसाद. (1987). बिहार केशरी डॉ0 श्री कृष्ण सिंह. बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी. पृष्ठ **49.**
12. वहीं. पृष्ठ **54.**
13. सखाराम, गणेश देउस्कर. (1910). 'दशेरकथा'. एशियाटिक सोशायिटीः कलकत्ता.
14. केजरीवाल, मोतीलाल. (1949). '42 की क्रांति में संथाल परगना''. भाग–1. दुमका. पृष्ठ **326.**
15. वहीं. पृष्ठ **328.**
16. विपिन्न, चन्द्र त्रिपाठी., अमलेष, देवरूण. (1972). ''स्वतत्रं ता संग्राम''. नेशनलबुक ट्रस्टः नई दिल्ली. पृष्ठ **121.**
17. कुमार, डॉ0 संजीत. (1855–1947). शोध–प्रबंध–''राष्ट्रीय चते ना के उद्भव में पत्रकारिता की भूमिका–संथाल परगना के विशेष संदर्भ में. पृष्ठ **188–190.**
18. वहीं. **167.**
19. राय, स्मृति शेष., कुमार, सुधीर. देवघर अतीत का एक झरोखा. देवघर जिला उद्घाटन स्मारिका. पृष्ठ **41.**
20. मिश्र, डॉ0 रत्नेश्वर. (1988). बिहार विभूति पं0 विनोदानदं झा. बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पृष्ठ **67.**